अध्याय 4

विविध बंदिशों का विस्तृत शास्त्रीय ज्ञान

(1) सरगम गीत

इसमें किसी प्रकार का साहित्य अथवा कविता नहीं होती, केवल राग से सम्बन्धित स्वर तालबद्ध होते हैं। विभिन्न रागों के पृथक–पृथक सरगम गीत होते हैं, जो पृथक–पृथक तालों में गाये जाते हैं। इनके अभ्यास से विद्यार्थियों को राग के स्वरूप अनुभूति का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। इसे स्वर–मालिका भी कहते हैं। इसके स्थायी और अन्तरा दो भाग होते हैं।

(2) लक्षण गीत

लक्षणगीत के शब्दों में अथवा साहित्य में राग की सम्पूर्ण विशेषताओं का वर्णन होता है। राग के वादी–संवादी तथा विवादी स्वर, राग का गायन समय, राग में प्रयुक्त कोमल, शुद्ध एवं तीव्र स्वरों का सम्यक वर्णन उस राग के लक्षण गीत को गाने से विद्यार्थियों को सरलतापूर्वक याद हो जाता है। प्रत्येक राग का पृथक–पृथक लक्षण होता है जो पृथक–पृथक तालों में गाया जाता है। इसमें भी स्थायी और अन्तरा दो भाग होते हैं। प्रायः सरगम गीत के बाद विद्यार्थियों को राग के लक्षणों का ज्ञान कराने के लिये लक्षण गीत सिखाया जाता है।

(3) ख्याल

पं. कुमार गंधर्व ग्वालियर घराना

फारसी भाषा में ''ख्याल'' का अर्थ है – कल्पना अथवा विचार करना। ''ख्याल'' गायन शैली मध्यकालीन संगीत की देन है। कुछ विद्वान इस गायन शैली का आविष्कारक''अमीर खुसरो'' को मानते हैं तो कुछ विद्वान जौनुपर के सुल्तान ''हुसैन शर्की'' को ख्याल के जन्मदाता मानते हैं। इस गायन शैली को लोकप्रिय बनाने का श्रेय मोहम्मद शाह रंगीले के दरबारी गायक ''सदारंग'' और ''अदारंग'' को है। इनके द्वारा रचित ''ख्याल'' आज तक मोहक अंदाज में गाये जाते हैं। इस गायन शैली में स्थायी और अन्तरा दो भाग होते हैं। यह शृंगार रस प्रधान गीत शैली है। भक्ति एवं करूण रस में भी अनेकों मार्मिक ख्यालों की रचना है। द्रुत ख्याल में गायक राग के नियमों का पालन करते हुए अपनी सृजनशीलता एवं कल्पना से आलाप, बोल आलाप, तान, बोल तान, को खटका, मुर्की, सरगम आदि से

ख्यालों को सजाकर गाते हैं। यह वर्तमान की सर्वाधिक लोकप्रिय गायन शैली है। ख्याल दो प्रकार के होते हैं –

(1) विलम्बित ख्याल अथवा बड़ा ख्याल

विलम्बित लय की तालों में निबद्ध गीत रचना को विलम्बित ख्याल अथवा बड़ा ख्याल कहते हैं। इसकी प्रकृति प्रायः गंभीर होती है। यह तिलवाड़ा, एकताल, आड़ा चौताल, झूमरा आदि तालों में गाया जाता हैं।

(2) द्रुत ख्याल अथवा छोटा ख्याल

द्रुतलय की तालों में निबद्ध गीत रचना को द्रुत ख्याल अथवा छोटा ख्याल कहते हैं। इसकी प्रकृति चपल चंचल होती है। यह प्रायः त्रिताल, एक ताल, रूपक, झपताल आदि प्रमुख तालों में गाया जाता है।

(4) तराना

कहा जाता है कि ओम हरि अनन्त नारायण इस प्रकार के शब्दों का परिवर्तित रुप दीम तन तदानी रुपों में कालान्तर में परिवर्तित हुआ अन्य मत में अरबी और फारसी भाषा के विद्वान ''अमीर खुसरो'' जब हिन्दुस्तान में आये तो यहाँ के शास्त्रीय संगीत से बहुत प्रभावित हुए किन्तु उन्हें ''संस्कृत'' भाषा का ज्ञान नहीं था। अतः उन्होंने निरर्थक शब्दों के माध्यम से यहाँ की रागों का गायन किया। ये निरर्थक शब्द की गायकी ही आगे चलकर ''तराना'' गायन शैली के नाम से प्रसिद्ध हुई।

''तराना'' गायकी में – ता ना, दे, रे, ओ दानी, त दाने, दीम तन आदि निरर्थक शब्दों के बोल राग विशेष में बांधकर गाये जाते हैं। ''स्थाई '' और ''अन्तरा'' इस गायकी के दो भाग होते हैं। गति द्रुत होती है। लय और ताल का आनंद ही इस गायकी की प्रधान विशेषता है। इस गायकी को प्रायः प्रस्तुति के अन्त में गाया जाता है।

(5) ध्रुपद

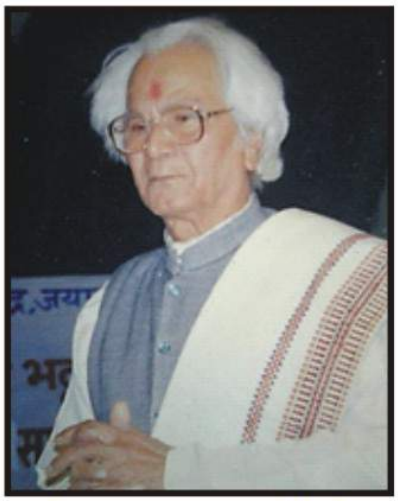

पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग

''प्रबंध'' गायन शैली की प्राचीन परम्परा का वर्तमान में प्रतिनिधित्व करने वाली वर्तमान विधा ''ध्रुपद'' है। वर्तमान समय में ध्रुवपद गंभीर एवं खुले गले की जोरदार गायकी मानी जाती है। यह गायकी वीर, श्रृंगार और शांत रस प्रधान है। ध्रुपद के गीत प्रायः हिन्दी, उर्दू एवं ब्रजभाषा में होते हैं किन्तु प्राचीन काल में ध्रुपद में संस्कृत के श्लोकों को गा कर ईश आराधना की जाती थी। 15वीं शताब्दी में ग्वालियर के नरेश राजा मानसिंह तोमर ने ध्रुपद के विकास हेतु कार्य किया था, ऐसा माना जाता है। ध्रुपद के 4 अंग होते हैं– स्थाई, अन्तरा, संचारी और आभोग। यह प्रायः सूल ताल, चौताल, तीव्रा, रूद्रताल, ब्रह्मताल में गाया जाता है। ध्रुपद गायन को उपरोक्त तालों की पखावज पर संगति प्रभावशाली बनाती है। ध्रुपद में तानों का प्रयोग नहीं होता है। दुगुन, चौगुन, बोलबांट लयकारी का चमत्कार ही ध्रुपद गायन शैली की विशेषता है। वर्तमान में ध्रुपद गायन के प्रारम्भ में नोमतोम का प्रभावशाली आलाप किया जाता है।राजस्थान में डागर परंपरा के प्रतिष्ठित गायक पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग हैं।

ध्रुपद के घरानों को ''वाणी'' संज्ञा दी गयी है। ध्रुपद के गायक ''कलांवत'' अथवा ''ध्रुपदिये'' कहलाते हैं। उनकी गायकी भेद से ध्रुपद की चार वाणियाँ मानी जाती है।

1) गोबरहार वाणी या शुद्ध वाणी
2) खंडहार वाणी
3) डागुर वाणी
4) नोहार वाणी

गोबरहार वाणी : यह शान्त रस प्रधान है। इसकी गति धीर–गंभीर होती है।

खंडार वाणी : इसकी गति तीव्र एवं स्वरूप वैचित्र्य वर्द्धक होता है।

डागुर वाणी : इसकी गति सहज और सरलता इसका प्रधान गुण है।

नोहार वाणी : इसकी गति सिंह के समान है । यह अद्‌भुत रस की सृष्टि करती है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- ख्याल गायकी मध्यकाल की देन है।
- सरगम गीत को राग की स्वरमालिका भी कहते हैं।
- ''तराना'' गायन शैली के जनक फारसी भाषा के विद्वान ''अमीर खुसरो'' को माना जाता है।
- ''सदारंग'' और ''अदारंग'' मोहम्मद शाह रंगीले के दरबारी–संगीतज्ञ थे जिन्होंने ख्याल गायकी को लोकप्रिय बनाया।
- ''ध्रुपद'' गायन शैली प्रबंध गायन की प्राचीन परम्परा का वर्तमान में प्रतिनिधित्व करने वाली शैली है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. केवल राग के स्वरों पर आधारित शब्दहीन बंदिश को क्या कहते हैं ?
2. जिस रचना के साहित्य अथवा शब्दों से राग की विशेषताएँ प्रकट हो, उसे क्या कहते हैं ?
3. निरर्थक शब्दों की राग विशेष में निबद्ध गायन शैली क्या कहलाती है ?
4. ध्रुपद की कितनी वाणियाँ है ?

निबंधात्मक प्रश्न

1. ख्याल गायन शैली की विशेषताओं एवं प्रकार को विस्तारपूर्वक समझाइये।
2. ध्रुपद गायन शैली के स्वरूप एवं ''वाणियों'' पर निबन्ध लिखिये।

समस्त नाद का आदि और अंत 'प्रणव' है जिसकी ओर साधक को बढ़ना है, और उसी में लीन होना है।
–महर्षि अरविंद